अगर हम यह समझना चाहते हैं कि “फिर से जन्म लेना” (wiedergeboren होना) सचमुच क्या है, तो पहले प्राकृतिक जन्म की ओर देखना ज़रूरी है। एक बच्चे का जन्म होने से पहले ही उसका जीवन उसकी पारिवारिक वंशावली और विरासत से बहुत हद तक प्रभावित होता है। उसके आनुवंशिक लक्षण, शारीरिक विशेषताएँ और सामाजिक पहचान उसके पूर्वजो द्वारा निर्धारित होती हैं। बाइबल में भी यह निरंतरता देखी जाती है — जैसे पॉल (पौलुस) पारिवारिक विरासत और आध्यात्मिक विरासत की महत्ता पर जोर देता है।

जैसे उदाहरण के लिए: तुम स्वाभाविक रूप से किसी एक जातीय समूह में जन्मे—शायद अफ्रीकी वंश से, गहरे रंग की त्वचा और कर्ली बालों के साथ। यह पहचान तुम अपने जन्म से पहले ही अपने वंश के कारण प्राप्त कर चुके थे। अगर तुम्हारे परिवार का सामाजिक दर्जा ऊँचा हो, तो यह भी तुम्हारी भूमिका और पहचान की अपेक्षाओं को आकार देता है।

लेकिन आत्मिक दृष्टि से, एक दूसरा जन्म होता है — ईश्वर की नई परिवार में जन्म लेना, यीशु मसीह के द्वारा। यही वह “नव‑जन्म” है, जिसके बारे में यीशु ने यूहन्ना 3:3 में कहा:

“अमें, आम तुमसे कहता हूँ: यदि कोई फिर से जन्म न ले, तो वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता।”

यह दूसरी जन्म शारीरिक नहीं है, बल्कि आत्मिक है। यह हमें एक नई वंशावली में ले जाती है — परमेश्वर के राज्य की, एक राजकीय और पवित्र परिवार जिसमें परमेश्वर ने हमें चुना है (जैसे 1
पतरस 2:9 में लिखा है)। इस परिवार में जन्म लेने का अर्थ है: नई आध्यात्मिक विशेषताएँ विरासत में पाना, नई पहचान प्राप्त करना, और परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप एक नियत भाग्य का अनुभव करना।

पुनर्जन्म की वास्तविकता को समझने के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना आवश्यक है:

पिता जो नए जन्म को देता है:

यीशु मसीह ही इस नए जीवन के स्रोत और रचयिता हैं (यूहन्ना 1:12‑13)।

नया पारिवारिक नाम;

विश्वासियों को “मसीही” (Christian) नाम दिया जाता है — मसीह जैसा, यह उनकी नई पहचान को दर्शाता है (प्रेरितों के काम 11:26)।

नई परिवार की विशेषताएँ:

पवित्रता, प्रेम, नम्रता और धर्म‑न्याय (इफिसियों 4:22‑24)।

हमारी जिम्मेदारी:

मसीह के उदाहरण और आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीना (1 यूहन्ना 2:6)।

बाइबल स्पष्ट कहती है कि मुक्ति सिर्फ़ यीशु मसीह में ही मिलती है:

“क्योंकि आकाश के नीचे मनुष्य को देने के लिए और कोई नाम
नहीं दिया गया है जिससे हम बचाए जाएँ।” — प्रेरितों के काम 4:12

जिस तरह प्राकृतिक जन्म में पानी और शारीरिक प्रक्रियाएँ जरूरी हैं, उसी तरह आत्मिक जन्म में भी कुछ आवश्यक कदम हैं:

पश्चात्ताप (पेनिटेंस):

पाप से मुक्ति के लिए दिल से मन बदलना (प्रेरितों के काम 3:19)।

पानी की बपतिस्मा:

सफाई और पुराने स्व की मृत्यु का प्रतीक (रोमियों 6:3‑4)।

यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा:

मसीह की अधिकारतता को स्वीकार करना, जैसा कि प्रेरितों ने किया (प्रेरितों के काम 2:38; 8:16)।

पवित्र आत्मा प्राप्त करना:

ईसाई जीवन के लिए अंदरूनी मुहर और शक्ति (इफिसियों 1:13‑14)।

प्रारंभिक चर्च में “यीशु के नाम में बपतिस्मा” की प्रथा इसलिए

महत्वपूर्ण थी क्योंकि यह सीधे मसीह की अधिकारतता से जुड़ता था — त्रिमूर्ति सूत्र (पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा) की पारंपरिक बाद की प्रथाओं के बजाय।

पुनर्जन्म एक व्यक्ति की प्रकृति को पूरी तरह बदल देता है। पवित्र आत्मा हमारे अंदर आती है और हृदय को नवीनीकृत करती है, जिससे प्रेम, आनन्द, शांति, आत्म-नियंत्रण जैसी आत्मिक फलें उगती हैं (गलातियों 5:22‑23)। एक विश्वास इंसान स्वाभाविक रूप से पाप से दूर जाने लगता है और पवित्र जीवन जीने लगता है (रोमियों 8:9‑11)।

यूहन्ना लिखता है:

“परन्तु जितनों ने उसे स्वीकार किया, उन सब को—जिन्होंने
उसके नाम पर विश्वास किया—उसने परमेश्वर के संताने बनने का अधिकार दिया: जो न तो रक्त से, न मांस की इच्छा से, न किसी
पुरुष की इच्छा से, बल्कि परमेश्वर से जन्मे हैं।” —
यूहन्ना 1:12‑13

यह आत्मिक विरासत हमें मसीह के दुःख और संसार द्वारा अस्वीकृति में भी भागीदार बनाती है:

“यदि संसार तुम्हें नफ़रत करता है, तो याद करो कि उस ने पहले
मुझ से नफ़रत की थी।” — यूहन्ना 15:18

यह भी ध्यान रखना ज़रूरी है कि हर वह व्यक्ति जो यह दावा करता है कि वह “फिर से जन्मा” है, वास्तव में इस नए जन्म का अनुभव नहीं करता। बहुत से लोग चर्च में शामिल होते हैं, पर उनकी वास्तविक पश्चात्ताप या सही बपतिस्मा नहीं होता। ऐसे लोग अक्सर पाप के साथ संघर्ष करते रहते हैं क्योंकि परमेश्वर का बीज उनमें निवास नहीं करता:

“जो परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका
बीज उस में रहता है, और वह पाप नहीं कर सकता — क्योंकि वह परमेश्वर से जन्मा है।” — 1 यूहन्ना 3:9

परमेश्वर का राज्य सर्वोच्च अधिकार है और वह अनंत काल तक चलेगा:

“संसार का राज्य हमारे प्रभु और उसके मसीह का राज्य हो गया,
और वह अनंतकाल तक राज्य करेगा।” — प्रकटयोजन 11:15

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

यीशु मसीह पूरे सृष्टि — स्वर्ग, पृथ्वी और आध्यात्मिक क्षेत्रों — पर राज करता है (कलुस्सियों 1:16‑17)। उसकी वापसी हमें अनन्त महिमा में ले जाएगी।

यीशु ने निकोदिमुस से कहा:

“सच‑सच मैं तुमसे कहता हूँ: यदि कोई पानी और आत्मा से जन्म न ले, तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।” — यूहन्ना 3:5

इसलिए, पुनर्जन्म वैकल्पिक नहीं है — यह मुक्ति और अनंत जीवन के लिए अत्यावश्यक है।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp